

रविवार 18 जनवरी, 2026

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: रोमियो 6: 23

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 4: 1, 4-6, 10, 13

- 1 हेमरे पुत्रो, पिता की शिक्षा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।
- 4 कि तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे; तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा।
- 5 बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर; उन को भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना।
- 6 बुद्धि को न छोड़, वह तेरी रक्षा करेगी; उस से प्रीति रख, वह तेरा पहरा देगी।
- 10 हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुन कर ग्रहण कर, तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।
- 13 शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 1 यूहन्ना 1: 1-3

- 1 उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ।
- 2 (यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ) ।
- 3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।

2. यूहन्ना 5: 8 (से यह वाणी), 19 (सचमुच), 24 (से 6th,)

- 8 यीशु ने उस से कहा, ...

- 19 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
- 24 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है,

3. मरकुस 5: 21 (कब)-24 (से), 35 (वहाँ)-43

- 21 जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई।
- 22 और याईर नाम आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पांवीं पर गिरा।
- 23 और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।
- 24 तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली,
- 35 वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरु को क्यों दुख देता है?
- 36 जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा; मत डर; केवल विश्वास रख।
- 37 और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपने साथ आने न दिया।
- 38 और आराधनालय के सरदार के घर में पहुंचकर, उस ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।
- 39 तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा, तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
- 40 वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु उस ने सब को निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहां लड़की पड़ी थी, गया।
- 41 और लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा, 'तलीता कूमी'; जिस का अर्थ यह है कि 'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ'।
- 42 और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए।
- 43 फिर उस ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा; कि उसे कुछ खाने को दिया जाए॥

4. यूहन्ना 3: 1-16

- 1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
- 2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरु हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।

- 3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
- 4 नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकि जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
- 5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
- 6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
- 7 अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
- 8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।
- 9 नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि ये बातें क्योंकि हो सकती हैं?
- 10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?
- 11 मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।
- 12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकि प्रतीति करोगे?
- 13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।
- 14 और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए।
- 15 ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥
- 16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

5. यूहन्ना 13: 31 (ईश ने कहा) केवल

- 31 ईश ने कहा,

6. यूहन्ना 14: 2-6, 11, 12, 15, 16

- 2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।
- 3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।
- 4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।
- 5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?
- 6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

- 11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
- 12 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।
- 15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
- 16 और मैं पिता से बिनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 497: 3 (जैसा)-4

सत्य के अनुयायी होने के नाते, हम बाइबल के प्रेरित वचन को अनन्त जीवन के लिए पर्याप्त मार्गदर्शक के रूप में लेते हैं।

2. 24: 4-13

मूल ग्रंथों से परिचित होना, और मानवीय मान्यताओं को छोड़ने की इच्छा (पुरुषों के सबसे खराब जुनून द्वारा पदानुक्रम, और उकसाने वाली मान्यताओं द्वारा स्थापित किया गया), वे क्रिश्चियन साइंस को समझने के लिए रास्ता खोलते हैं, और बाइबल को जीवन का चार्ट बनाते हैं, जहां सत्य के संरक्षण और उपचार धाराओं को इंगित किया गया है।

वह जिस पर "प्रभु का भुजबल" प्रकट हुआ है, वह हमारे समाचार पर विश्वास करेगा, और पुनर्जन्म के साथ जीवन की नवीनता में उठेगा।

3. 410: 4-13

"यह जीवन अनन्त है," यीशु कहते हैं, - है, नहीं होगा; और फिर वह अपने पिता और स्वयं के वर्तमान ज्ञान के रूप में अनन्त जीवन को परिभाषित करता है, - जिसका अर्थ है प्रेम, सत्य और जीवन का ज्ञान। और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। धर्मग्रंथ कहते हैं, "इंसान सिर्फ़ रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुँह से निकलने वाले हर वचन से जिंदा रहेगा," यह दिखाता है कि सत्य ही इंसान की असली जिंदगी है; लेकिन इंसान इस शिक्षा को प्रैक्टिकल बनाने पर एतराज करते हैं।

4. 192: 27-31 अगला पृष्ठ

हम ईश्वरीय तत्वमीमांसा की समझ में अपने गुरु के उदाहरण का अनुसरण करके सत्य और प्रेम के नक्शेकदम पर चलते हैं। ईसाई धर्म सच्ची चिकित्सा का आधार है। जो कुछ भी मानव विचार को निःस्वार्थ प्रेम के अनुरूप रखता है, वह सीधे दैवीय शक्ति प्राप्त करता है।

मुझे लिन में मिस्टर क्लार्क से मिलने के लिए बुलाया गया था, जो छह महीने तक कूल्हे की बीमारी के साथ अपने बिस्तर तक ही सीमित थे, जो कि एक लकड़ी के बड़े स्पाइक पर गिरने से हुआ था, जब वह एक लड़का था। घर में प्रवेश करने पर मैं उनके चिकित्सक से मिला, जिन्होंने कहा कि मरीज मर रहा था। चिकित्सक ने कूल्हे पर अल्सर की जांच की थी, और कहा कि हड्डी कई इंच तक फैली हुई थी। उन्होंने मुझे जांच भी दिखाई, जिसमें हड्डी की इस स्थिति के प्रमाण थे। तब डॉक्टर बाहर गए। मिस्टर क्लार्क अपनी आँखों के साथ स्थिर और दृष्टिहीन थे। मौत का ओस उसके माथे पर था। मैं उसके बिस्तर के पास चला गया। कुछ ही पलों में उसका चेहरा बदल गया; इसकी मृत्यु-पालक ने एक प्राकृतिक रंग को जगह दी। पलकें धीरे से बंद हो गईं और साँस लेना स्वाभाविक हो गया; वह सो रहा था। लगभग दस मिनट में उसने आँखें खोलीं और कहा: "मैं एक नए आदमी की तरह महसूस कर रहा हूँ। मेरी पीड़ा पूरी तरह से दूर हो गई है।" यह घटना दोपहर के तीन से चार बजे के बीच हुई।

मैंने उससे कहा कि उठो, कपड़े पहनो और अपने परिवार के साथ खाना खाओ। उसने वैसा ही किया। अगले दिन मैंने उसे आँगन में देखा। तब से मैंने उसे नहीं देखा, लेकिन मुझे बताया गया कि वह दो हफ्ते में काम पर चला गया। घाव से पानी निकलना बंद हो गया और घाव ठीक हो गया। बचपन में चोट लगने के बाद से ही बीमारी वहीं थी।

उसके ठीक होने के बाद मुझे बताया गया है कि उसके डॉक्टर ने उसे ठीक करने का दावा किया है, और उसकी माँ को पागलखाने में बंद करने की धमकी दी गई है क्योंकि उसने कहा था: "उसे ठीक करने वाले कोई और नहीं बल्कि भगवान और वह औरत ही थे।" मैं उस रिपोर्ट की सच्चाई की पुष्टि नहीं कर सकता, लेकिन मैंने उस आदमी के लिए जो देखा और किया, और उसके डॉक्टर ने मामले के बारे में जो कहा, वह ठीक वैसा ही हुआ जैसा मैंने बताया है।

5. 289: 14-20

यह तथ्य कि क्राइस्ट या सत्य, मृत्यु पर काबू पा लेता है और "आतंकियों का राजा" साबित हो जाता है, लेकिन एक नश्वर विश्वास, या त्रुटि, जिसे सत्य जीवन के आध्यात्मिक प्रमाणों से नष्ट कर देता है; और इससे पता चलता है कि मृत्यु के प्रति इंद्रियों को जो दिखाई देता है वह वास्तविक मनुष्य और वास्तविक ब्रह्मांड के लिए एक नश्वर भ्रम है, लेकिन मृत्यु-प्रक्रिया नहीं है।

6. 52: 19-28

"दुखों का आदमी" दुनियावी जिंदगी और समझ की कमी और सबको शामिल करने वाले भगवान, अच्छाई की बड़ी सच्चाई को सबसे अच्छे से समझता था। ये माइंड-हीलिंग, या क्रिश्चियन साइंस के दो खास पॉइंट थे, जिसने उसे प्यार से लैस किया। भगवान के सबसे बड़े दुनियावी नुमाइंदे ने, इंसान की दैवीय शक्ति को दिखाने की काबिलियत के बारे में बात करते हुए, अपने चेलों से भविष्यवाणी करते हुए कहा, सिर्फ उनके दिन के लिए नहीं बल्कि हमेशा के लिए: "जो मुझ पर विश्वास करता है, जो काम मैं करता हूँ, वह भी वही करेगा;" और "ये निशानियाँ उनके साथ होंगी जो विश्वास करते हैं।"

7. 324: 13 (यह)-18, 32-19

जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

यीशु ने वास्तव में कहा, "जो कोई है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा" मतलब, वह जो जीवन के सच्चे विचार को मानता है वह मृत्यु में अपना विश्वास खो देता है। जिसके पास भलाई का सच्चा विचार है वह बुराई के सभी अर्थों को खो देता है, और इस कारण से आत्मा की शाश्वत वास्तविकताओं में प्रवेश किया जा रहा है। ऐसा मनुष्य जीवन में रहता है, - वह जीवन जो शरीर को सहायक जीवन के लिए नहीं बल्कि सत्य के लिए प्राप्त होता है, अपने स्वयं के अमर विचार को प्रकट करता है।

कुलुस्सियों (3:4) में पॉल लिखते हैं: "जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा [दिखाई देगा], तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए [दिखाई देगा] जाओगे।" जब आध्यात्मिक अस्तित्व को उसकी पूर्णता, निरंतरता और शक्ति में समझा जाता है, तब मनुष्य ईश्वर की छवि में पाया जाएगा। प्रेरितिक शब्दों का पूर्ण अर्थ यह है: तब मनुष्य उसकी समानता में, पिता के समान परिपूर्ण, जीवन में अविनाशी, "ईश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ" पाया जाएगा - दिव्य प्रेम में सत्य के साथ, जहां मानवीय भावना ने मनुष्य को नहीं देखा है।

8. 126: 22-31

मैंने क्रिश्चियन साइंस और बीमारियों के इलाज में इसके इस्तेमाल को वैसे ही बताया है जैसे मैंने उन्हें खोजा है। मैंने मन से दिखाया है कि इंसानों की सेहत, लंबी उम्र और नैतिकता पर सच का क्या असर होता है; और मुझे पुराने या नए सिस्टम में ऐसा कुछ नहीं मिला जिस पर मैं अपनी राय बना सकूँ, सिवाय हमारे महान गुरु की शिक्षाओं और प्रदर्शनों और पैगंबरों और धर्मदूतों के जीवन के। बाइबिल ही मेरी एकमात्र जानकारी रही है। सच के "सीधे और सकरे रास्ते" पर मुझे कोई और गाइड नहीं मिला।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6